हुतासनी नो ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल।
चोवा चंदन अनेक अरगजा, हूं छांटी करूं वालाजीने लाल।। १५ ।।

होली का उत्सव बहुत ही अच्छा है। मैं आकर अबीर और गुलाल के साथ आपसे खेलूंगी। सुन्दर सुगन्धित तेल, चन्दन, इत्र छिड़क-छिड़क कर हे वालाजी! मैं आपको लाल कर दूंगी।

सुंदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसूं रंग अपार।
लोपी लाज रमूं हूं तमसूं, इंद्रावतीना आधार।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! हम सब मिलकर अपने वालाजी के साथ बड़ी उमंग से खेलें। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे प्रीतम! मैं लोक लज्जा छोड़कर आपके साथ होली खेलूंगी।

हवे वेहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय।
सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणे ताय।। १७ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे तुरन्त बुलाओ। मेरे मन में खेलने की उमंग समाती नहीं है। हे मेरे सुन्दर धनी! मैं आकर आपको उसी समय जीत लूंगी।

इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम।
एणे वचने ततखिण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हांम।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपकी अंगना हूं और आपके बिना बिलख रही हूं। यह वचन सुनकर मुझे धनी तुरन्त बुलाएंगे, तो मैं मिलकर अपने मन की तड़प (चाहना) मिटाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

॥ गरमी रुत (वैसाख–जेठ) ॥

राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीखम हो।। टेक ।।

रुत ग्रीखम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली जाय।
पिउजी विना हूं एकली, खिण वरसां सो थाय।। १ ।।

वालाजी के बिना यह गर्मी की ऋतु बड़ी कठिनाई से बीतती है। प्रीतम के बिना मैं अकेली हूं और एक पल सौ वर्ष के समान लग रहा है।

ग्रीखमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय।
फूल फल दीसे रे अति उत्तम, एणी रुते वन सोहाय।। २ ।।

हे वालाजी! गरमी की ऋतु आई है। बेलें और वन सब मनमोहक हो गए हैं। फल और फूलों से सजे हुए वन शोभा देते हैं।

घाटी छाह्या सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार।
एणी रुते मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार।। ३ ।।

वन की गहरी छाया है। फूलों की सुगन्ध अपार है। इसलिए, हे प्रीतम! मुझे बुलाकर मेरे साथ खेलो।

रमवाने जीव तरसे मारो, रूडी रमवानी आ रुत।
खंत खरी मलवानी तमसूं, लागी रही छे मारे चित।।४।।

हे प्रीतम! मेरा जीव आपके साथ खेलने को तरस रहा है। यह ऋतु भी अच्छी खेलने वाली है। अब मेरे मन में आपसे मिलने की सच्ची चाहना है।

कोयलडी टहुंकार करे रे, सुडला करे रे कलोल।
एणी रुते हूं एकलडी, रोई नेंणा करूं रंग चोल।।५।।

कोयल कूक रही है। तोते (पोपट) आनन्द कर रहे हैं। ऐसे समय में मैं रो-रोकर आंखों को लाल कर रही हूं।

वांदर मोर क्रीडे वनमां, आनंद देखी वनराय।
एणे समे वालाजी विना, विरहसूं कालजडूं रे कपाय।।६।।

वानर और मोर वन के आनन्द को देखकर वन में खेल रहे हैं। इस समय वालाजी के विरह से मेरा कलेजा फटा जा रहा है।

भमरा मदया करे रे गुंजार, लई फूलडे बहेकार।
एणी रुते धणी धाम विना, घडी एकते केमे न जाय आधार।।७।।

भंवरे फूलों की सुगन्ध से मस्ती में गूंज रहे हैं। ऐसी ऋतु में हे धाम के धनी! आपके बिना एक घड़ी भी कैसे बीते?

एणी रुते अमने नव तेडो, तो जीव घणुं दुखी थाय।
दिन दोहेला घणुए निगमूं, पण रैणी ते केमे न जाय।।८।।

हे वालाजी! यदि इस ऋतु में आपने न बुलाया तो जीव बहुत दुःखी होगा। मैंने बहुत कठिनाई वाले दिन बिताए हैं, पर रात तो अब किसी तरह से बीतती नहीं है।

कठणाई एवी कां करो वाला, हजी दया तमने न थाय।
बीजा दुख अनेक खमूं, पण धणीनो विरह न खमाय।।९।।

हे वालाजी! अब आप इतने कठोर क्यों बन गए हो? अभी भी आपको दया नहीं आती। दूसरे अनेक दुःख तो मैं सहन कर सकती हूं, परन्तु धनी का विरह सहन नहीं होता।

कलकले जीवने कांपे काया, करे निस्वासा निसदिन।
नैणे जल आवे निझरणां, कोई अखूट थया उतपन।।१०।।

मेरा जीव बिलखता है और शरीर कांपता है। ठंडी आहें दिन-रात चलती हैं। नेत्रों से आंसू झरने की तरह बह रहे हैं। ऐसा झरना, जिसका पानी समाप्त नहीं होता।

एक निस्वासे जीव निसरे, पण दुख खमूं छूं ते जुए विचार।
ते विनती करूं रे वाला, सुणो इंद्रावतीना आधार।।११।।

एक ठंडी आह में जीव को निकाल सकती हूं, परन्तु जीव से विचार कर दुःख को सहन करती हूं। इसीलिए, हे इन्द्रावती के वालाजी! मैं आपसे विनती करती हूं, उसे सुनो।

देखे जीव दुख घणूं दुर्लभ, मेलो धणीनो आवार।
श्री धाम मधे मेलो सदीवे, पण दुर्लभ मेलो संसार।। १२ ।।

जीव ने बड़े घोर दुःख देखे हैं। इस बार ही धनी मिले हैं। परमधाम में तो सदा मिलना ही है, पर संसार में मिलना कठिन है।

नौतनपुरीमां धणी मलवाने, जीव न मूके काया।
धणीनो विछोडो घेर खिण नहीं, विछोडो मेलो मांहें माया।। १३ ।।

नौतनपुरी में ही धनी से मिलने के लिए यह जीव शरीर नहीं छोड़ रहा है। परमधाम में धनी का वियोग एक पल का भी नहीं है। यह वियोग तो माया के बीच में मिला है।

आ मेलो दुर्लभ ते माटे, नहीं आवे बीजी वार।
ते माटे जीव कलपे मारो, नौतनपुरी मलवा आधार।। १४ ।।

यह मेला इसलिए दुर्लभ है क्योंकि दूसरी बार आना नहीं है। इसीलिए नौतनपुरी में अपने प्रीतम से मिलने के लिए मेरा जीव दुःखी है।

हवे न थाय मेलो श्री देवचन्दजी सों, जो कीजे अनेक उपाय।
घरे मेलो अभंग छे, पण नौतनपुरी ए न थाय।। १५ ।।

अब कितने भी उपाय करें श्री देवचन्द्रजी से मिलाप नहीं होगा। घर में मिलना तो अखण्ड (सदैव) है, परन्तु नौतनपुरी में मिलना नहीं होगा।

सुंदर श्रीमुख वचन सांभरे, त्यारे जीवने कालजे लागे घाय।
पण चूकी अवसर जो हूं पेहेली, तो न आवे हाथ ते दाय।। १६ ।।

जब श्रीमुख के सुन्दर वचनों की याद आती है तो कलेजे में घाव लगते हैं, परन्तु जो मौका पहले गंवा दिया है, अब फिर से दुबारा आने वाला नहीं है।

हवे कलकलीने कहूं छूं रे वाला, मूने तेडजो चरणे।
तेहेने छेह केम दीजिए रे वाला, जे आवी ऊभी सरणे।। १७ ।।

अब बिलखकर मैं कहती हूं कि हे वालाजी! मुझे चरणों में बुलाओ। जो आपकी शरण में आकर खड़ी हो उसको जुदाई कैसे देते हो?

हवे विरह वीटी विनता कहे, रखे खिण लावो वार।
अमने आवी तेडी जाओ, जेम लऊं लाभ मांहें संसार।। १८ ।।

अब विरह से दुःखी हुई आपकी अंगना कहती है कि एक क्षण की भी देरी मत करो और आकर हमको बुलाओ जिससे संसार में लाभ लूं।

आ मायानो मेलो दुर्लभ, जुओने विचारी मन।
लऊं लाभ मलीने तमने, जेम सहु कोई कहे धंन धंन।। १९ ।।

मन से विचार कर देखो तो माया में मिलना कठिन है। मैं आपसे मिलकर लाभ लेना चाहती हूं जिससे सभी कोई मुझे धन्य-धन्य कहें।

अणजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए।
जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझूं ते तेणी दाहे।। २० ।।

अनजाने में बहुत सुख खो दिया। अब पहचान करके यह सुख कैसे जाने दूं। जो निधि (न्यामत) अनजाने में चली गयी है उसकी याद मुझे जला रही है।

इंद्रावती कहे आयत करी, एक वार तेडो अमने।
जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से कहती हैं कि एक बार मुझे बुलाओ, जिससे अत्यन्त उमंग में भरकर आऊं और आपको जीतूं।

में अनेक वार जीत्यो रे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें।
ते माटे मोसूं करो रे अन्तर, पण नाठ्या न छूटसो क्याहें।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मैंने आपको अनेक बार जीता है, यह आप अच्छी तरह जानते हो, इसीलिए मेरे से छिप रहे हो, परन्तु भागने पर भी मेरे से बच न सकोगे।

हूं जोर करीने ज्यारे आविस इहां, त्यारे तमे करसो केम।
एणे वचने इंद्रावतीए, वालोजी कीधां छे नरम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि मैं हौसला करके आ ही जाऊंगी तो तुम क्या करोगे? इन वचनों से श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को नरम कर दिया।

हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार।
ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रुदयासों भीडसे आधार।। २४ ।।

वालाजी इस समाचार को सुनकर तुरन्त बुलाने के लिए आएंगे। श्री इन्द्रावतीजी के वचन सुनते ही हृदय से लगा लेंगे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ११२ ।।

।। अधिक मास ।।

राग धनाश्री

सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक वात।
आवडाने दुख तमे कां, दीधां रे निघात।। १ ।।

हे मेरे धनी! सुनो मैं अपनी आप बीती कहती हूं। इतना अथाह दुःख आपने मुझे क्यों दिया?

रुत सघली रे हूं घणूं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार।
न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार।। २ ।।

सब ऋतुओं में मैंने बहुत अधिक दुःख उठाया। हे धनी! आपने फिर भी मेरी खबर नहीं ली। पता नहीं आपने मेरे जीव को अब तक जीवित क्यों रखा? नहीं तो निश्चय ही इसे रहना नहीं चाहिए था।